हकीकत की जमीन पर आशा के फूल

(राजकीय प्राथमिक विद्यालय भड़कोट, चिन्यालीसौड़)

मंजू रावत
अजहर खान

;g प्राथमिक विद्यालय भड़कोट गांव में स्थित है। भड़कोट गांव समुद्र तल से 1075 मीटर पर है। गांव के दाहिनी ओर एक घाटी है जिसमें पानी का एक गधेरा है। सर्दी में गांव तक बर्फ गिरती है। गांव के पास लगा हुआ घना जंगल है। गांववासी खेती किसानी के साथ–साथ पशुपालन बहुतायत में करते हैं। गांव में अधिकतर मौसम ठण्डा ही रहता है। अक्सर बच्चे सर्दी जुकाम से परेशान रहते हैं। ज्यादातर बच्चों की नाक बहती है। गर्मी के मौसम में जंगलों में आग लग जाती है गांव तक आग का खतरा बना रहता है। यह क्षेत्र झील के उस पार है जिसके कारण चिन्यालीसौड़ से सम्पर्क करने में भी भारी कठिनाइयां होती हैं।

गांव के सभी बच्चे गढ़वाली भाषा बोलते हैं। गांव के अधिकतम लोग साक्षर हैं। गांव में अलग–अलग खानदान हैं, कुछ विवाह गांव में ही हो जाया करते है। गांव का माहौल मेलजोल से भरपूर है। आपसी सहयोग की भावना है। गांव में कुछ ऐसे शिल्पकार भी हैं जो टोकरी, रस्सी, चटाई, झाड़ू, व लकडी की सुन्दर वस्तुएं बनाते हैं। अधिकतर पढ़े–लिखे लोग गांव से पलायन कर जाते हैं। इस गांव में 1984 में प्राथामिक विद्यालय खुला था। उससे पहले इस गांव के बच्चे 5 किलोमीटर दूर जाते थे। यहां का विद्यालय भवन नये डिजाइन से बना हुआ है। इसका पुनर्निर्माण 2007 में हुआ था। विद्यालय की चारदीवारी बनी है। प्रार्थना सभा और खेलकूद के लिए एक छोटा मैदान है। मध्याहन भोजन पकाने के लिए किचन कम स्टोर रूम बना है। मैदान के किनारे फूलवारी है। विद्यालय की दीवारों पर प्रतीक चित्र सूचनाएं व सूक्तियां लिखी गयी हैं। दो शौचालय बने हैं, बालक–बालिकाओं के लिए अलग–अलग है और चालू हालत में है। विद्यालय के ऊपर नीचे पक्की सड़क है। बच्चों के बैठने के लिए हवादार कमरे, टाट पट्टी तथा विद्यालय के फर्नीचर व अन्य भौतिक सुविधाएं पर्याप्त हैं। विद्यालय में दो शिक्षिकाएं हैं। 47 बच्चे है जिनमें 16 बालक और 31 बालिकाएं हैं। इस सत्र में 8 नये बच्चों का नामांकन हुआ है।

विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति को बनाये रखना एक चुनौतीपूर्ण काम है। गांव में एक निजी विद्यालय खुला है जो 3 वर्ष तक के बच्चों को प्रवेश दे देता है जबकि हमारा विद्यालय 6 वर्ष तक के बच्चों को प्रवेश देता है। ऐसी स्थिति में बच्चों की संख्या बनाये रखना कठिन हो जाता है। रजनी नेगी ने बताया कि इस समस्या के चलते हमने भी अभिभावकों से सम्पर्क तेज कर दिया और विद्यालय में काफी मेहनत से बच्चों को पढ़ाया। इसके बाद कुछ लोग अपने बच्चों को वापस इस विद्यालय में भेजने लगे। दूसरी चुनौती यह भी है कि बच्चों को स्कूल के अलावा उनके पढ़ने, सीखने में घर से सहयोग नाममात्र का है। जो कुछ सीखना है स्कूल में ही सीखना है। हमने भी यह हकीकत पहचान ली है और कोशिश यही रहती है कि बच्चों को स्कूल में ही सीखने की ज्यादा व्यवस्था हो। पहले भी चुनौती थी कि समुदाय को समझ में नहीं आता था कि वे विद्यालय में किस प्रकार सहयोग करें, जब से सर्वशिक्षा अभियान के तहत विद्यालय प्रबंधन समिति के प्रशिक्षण होने लगे या समुदाय जागरूकता व विद्यालय में भागीदारी के कार्यक्रम चले तो हमारा काम आसान हो गया।

विद्यालय के प्रति अभिभावकों का रवैया सकारात्मक व सहयोगपूर्ण है। कभी यह भी समस्या होती है कि क्योंकि विद्यालय में दो ही शिक्षिकाएं हैं। अक्सर एक को विद्यालय के बाहर के काम की सूचनाएं, सूचनाओं का आदान–प्रदान व अन्य शिक्षणेत्तर कामों में संलग्न होना पड़ता है। ऐसी स्थिति में एक ही टीचर को पांचों कक्षाएं देखनी पड़ती हैं। इसका भी एक तरीका निकाला गया जिसे बहुकक्षा शिक्षण नाम से जाना जाता है। चूंकि बच्चों की संख्या बहुत ज्यादा नहीं है, अतः अलग–अलग कक्षा के बजाए कक्षा 1 व 2 को एक साथ व 3,4,5 को एक साथ डील करते हैं। काम भले ही अलग–अलग रहता है मगर बैठते एक साथ हैं।

बावजूद इन समस्याओं के इस विद्यालय को ऊंचा मुकाम देने के लिए दोनों शिक्षिकाएं रजनी नेगी और लाजवंती चौहान अपने पूरे मनोयोग से जुटी हुई हैं। रजनी नेगी 14 वर्षों से प्राथमिक टीचर के रूप में काम कर रही हैं। उन्होंने राजनीति विज्ञान से स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है और बीटीसी पास किया है। रजनी इस विद्यालय में 13 वर्षों से कार्यरत हैं। आप अपना संकल्प इन पंक्तियों में बयां करती हैं कि 'आंकड़ों के भ्रमजाल में फंसी शिक्षा की हकीकत की जमीं पर आशा के फूल खिलायेंगे।'

जब रजनी शिक्षिका बनी थीं तो कुछ विचार पक्के कर लिये थे। मसलन यह कि यह पेशा तभी सार्थक है जब बच्चे कुछ सीख पायें। उन्होंने बताया कि हम जो अपेक्षा बच्चों से करते हैं जैसे रोज स्कूल आना। पूरे मन से सीखना साफ सफाई रखना इत्यादि में सारी बातें पहले खुद पर लागू करनी होती हैं। यदि हम समय से और नियमित विद्यालय आते हैं तो बच्चे भी आयेंगे। और केवल विद्यालय आना ही पर्याप्त नहीं हैं बच्चों के साथ काम भी पूरी मेहनत से करना होता है। सीखने में उनकी मदद भी करनी पड़ती है तभी बच्चे अच्छा सीख पाते हैं। हम सेलेबस में ही नहीं फंसे रहते, इससे बाहर निकलना भी जरूरी होता है।

शिक्षक का पेशा तभी सार्थक है जब बच्चे कुछ सीख पायें। हम जो अपेक्षा बच्चों से करते हैं जैसे रोज स्कूल आना, पूरे मन से सीखना, साफ-सफाई रखना इत्यादि में सारी बातें पहले खुद पर लागू करनी होती हैं। यदि हम समय से और नियमित विद्यालय आते हैं तो बच्चे भी आयेंगे। केवल विद्यालय आना ही पर्याप्त नहीं है बच्चों के साथ काम भी पूरी मेहनत से करना होता है। सीखने में उनकी मदद भी करनी पड़ती है तभी बच्चे अच्छा सीख पाते हैं।

सेलेबस के साथ सहशैक्षिक गतिवधियां, स्कूल की चहारदिवारी के बाहर का परिवेश भी सीखने में मददगार होता है। इसके लिए मुझे लगता है कि बहुत महत्वपूर्ण होता है सीखने–सिखाने के वातावरण का निर्माण करना। हमने इस बारे में ध्यान दिया। जब यह वातावरण अनुकूल होता है तो बच्चा बेहतर सीखता है। हमें इसके अच्छे नतीजे प्राप्त हुए हैं। भले ही बच्चे पाठ्यवस्तु को न रटें अपितु उस पर बच्चों की समझ बननी चाहिए ऐसी हमारी कोशिश रहती है। हम ऐसा सोचते हैं कि जो कुछ समस्या हमारे स्तर की है, स्कूल में सुलझा सकते हैं, जैसे बच्चों को खुश रहना चाहिए। रोज शैक्षिक गतिविधियां होनी चाहिए ताकि बच्चों का समय सार्थक हो, हर रोज कुछ न कुछ स्कूल से सीखकर जाये।

पढ़ना–लिखना आना चाहिए साफ सुथरा दिखना चाहिए। न केवल विषयों का ज्ञान अपितु जीवन के तौर तरीके भी सीखने चाहिए, तो इसमें हमारी पूरी कोशिश रहती है। इस पर हम अपने विद्यालय के बारे में खुद ही क्या तरीफ करें। बस इतना कहेंगे कि हमारे बच्चों का सम्प्राप्ति स्तर ठीक है। समुदाय का अच्छा सहयोग है। स्कूल के काम और बाहरी काम में तालमेल बैठाकर चलते हैं। बच्चों ने आयु अनुरूप व कक्षाअनुरूप मूलभूत अवधारणाएं सीख ली है। यह बच्चों के काम में आप स्वयं देख सकते हैं।

समस्याएं हैं, एक मामूली सी पेंसिल–रबड़ के लिए बच्चे घरों में डांट खाते हैं। हम इसमें भी बच्चों की मद्द करते हैं, अभिभावकों से बात करते हैं कि कैसे बच्चों की जरूरतें प्राथमिकता में आयें। इसमें कुछ हद तक हमें सफलता भी मिली है। दूसरी शिक्षिका लाजवंती जी से बात नहीं हो पायी क्योंकि वह प्रशिक्षण ले रही थीं।

भड़कोट विद्यालय में बच्चों व शिक्षिका के रिश्तों का अन्दाज इस बात से सहज ही लगाया जा सकता है कि जब बच्चे पढ़ाई के दौरान शिक्षिका से काम लेते हैं तो सभी बच्चे मैडम को घेरे रहते हैं कोई उनके मुंह के सामने कोई दाएं कोई बाईं ओर। कुछ पीठ के पीछे खड़े होते हैं जब वे मैडम के चारों तरफ खड़े होते हैं तो पता नहीं चलता कि कोई उस झुण्ड में बड़ा भी है। बच्चे शिक्षिका के कन्धे हाथों पैरों के सहारे भी खड़े रहते हैं शिक्षिका का इस ओर ध्यान नहीं रहता या यह उनको स्वाभाविक लगता है।

बच्चे उनको कुछ पूछते भी हैं तो बिना औपचारिकता से। वे उनको बड़े प्यार से समझाती है जो भी बच्चा चुपचाप बैठा रहता है उससे पूछती है ....काम खत्म हो गया? चुप क्यों बैठा है ? आ नहीं रहा है क्या ? लिखने का मन नहीं है क्या? क्या करेगा? भूख लगी है क्या? इसमें से बच्चे को जो भी लगता है वह बिना डरे झिझके शिक्षिका से कह देता है। जब वह सारे दिन बच्चों से यह पूछती रहती है तो बच्चों की जो भी समस्या होती है वे अपनी शिक्षिका को सहजता से बता देते हैं। अक्सर उनको समझ न आने पर शिक्षिका उनको प्यार से समझाती हैं। कभी कभी खेलने में या गिरने पर या लड़ाई–झगड़े में कोई बच्चा रोने लगता है तो उसको गोद में उठाकर प्यार करती है या उनके पास जो भी ऐसी चीज होती है जिससे वह चुप हो जाए वह उसको दे भी देती है। स्कूल में यदि कोई बच्चा साफ नहीं हो और नाक बह रही हो तो उसको साफ करने में पीछे नहीं हटती। पानी लेकर साफ करती हैं और कहती है ...कितना सुन्दर लग रहा है कक्षा का ऐस माहौल उनके सीखने समझने की प्रक्रिया में चार चांद लगा देता है।

इस विद्यालय के बारे में संकुल समन्वयक श्री मानवेन्द्र जी कहते हैं कि हमारी नजर में यह विद्यालय अपने मानकों पर अच्छा है। निःसंदेह इसमें शिक्षिकाओं की लगन और निष्ठा महत्वपूर्ण है। जो उनके स्तर की जिम्मेदारियां हैं, वह वे बखूबी निभाती हैं लेकिन जो इस स्तर की नहीं हैं उन पर गौर करना होगा। बी. आरसी पोखरियाल जी की भी टिप्पणी थी कि सेवारत प्रशिक्षण के इनपुट इन शिक्षिकाओं ने विद्यालय में साकार किये हैं, यह संतोष की बात है।

> मुझे लगता है कि बहुत महत्वपूर्ण होता है सीखने -सिखाने के वातावरण का निर्माण करना। हमने इस बारे में ध्यान दिया। जब यह वातावरण अनुकूल होता है तो बच्चा बेहतर सीखता है। हमें इसके अच्छे नतीजे प्राप्त हुए हैं। भले ही बच्चे पाठ्यवस्तु को न रटें अपितु उस पर बच्चों की समझ बननी चाहिए ऐसी हमारी कोशिश रहती है।

विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों की नजर में इस विद्यालय की छवि सुन्दर है। वह भी सहयोग देते हैं। समिति की नियमित बैठकें होती हैं और जो भी मसले आते हैं उनका निपटारा किया जाता है। उन्होंने विद्यालय की अच्छाई इस रूप में गिनाई कि विद्यालय नियमित और समय से खुलता है। बच्चों को पढ़ना आता है, अच्छे पढ़ रहे हैं। शिक्षिकाओं का व्यवहार बहुत अच्छा है। वे बच्चों में बहुत प्रिय है, मेहनत से पढ़ाती हैं। खाना अच्छा मिलता है। शिक्षिका लोग घरों में अभिभावकों से बराबर मिलती हैं। आपकी कुछ पंक्तिया हैं–

'वो जो नेमतों से महरूम हैं दुनिया में,
उनको अब उनके मुकन्दर का सिकन्दर बनायेंगे हम।'

■